प्राक्कथन

मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्राद्यौगिकी परिषद् ने समाजनीति समीक्षण केंद्र के साथ मिलकर प्रदेश के विभिन्न जिलों के लिये संसाधन मानचित्रकोष बनवाने का एक महत्त्वाकांक्षी प्रकल्प प्रारंभ किया है। इस प्रकल्प में झाबुआ-अलीराजपुर, सीधी-सिंगरौली, टीकमगढ़ और दतिया जिलों के मानचित्रकोष अंग्रेजी में और झाबुआ-अलीराजपुर और दतिया के मानचित्रकोष हिंदी में भी छप चुके हैं। इनके अतिरिक्त मध्यप्रदेश राज्य के संसाधन मानचित्रकोष (अंग्रेजी में) और द्विभाषी मध्यप्रदेश कृषि मानचित्रावलि का प्रकाशन भी हो चुका है। अब टीकमगढ़ जिले के संसाधन मानचित्रकोष का यह हिंदी संस्करण छापते हुए हमें बहुत प्रसन्नता हो रही है।

परिषद् सुदूरसंवेदी उपग्रहों से प्राप्त सूचनाओं के विश्लेषण एवं उपयोग के लिये मध्यप्रदेश की केंद्रीय संस्था है। प्रदेश के भूगोल, स्थलाकृति, भूविज्ञान, भूगर्भीय संरचना एवं मृदा संबंधी प्राथमिक मानचित्रों और इनके आधार पर बनाये गये आनुषंगिक मानचित्रों का संग्रह परिषद् में है। अनेक वर्षों के भू-उपयोग मानचित्र भी परिषद् में उपलब्ध हैं। किसी जिले के संसाधन मानचित्रकोष में ऐसे मानचित्रों का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है।

समाजनीति समीक्षण केंद्र में भारत के विभिन्न भागों के इतिहास, भूगोल, जनसांख्यिकी एवं संस्कृति के विभिन्न आयामों संबंधी विस्तृत जिला एवं ग्राम-स्तरीय सूचनाएँ एकत्रित करने का प्रयास होता रहा है। अठारहवीं शताब्दी के अंत में वहाँ ब्रिटिश प्रशासन की स्थापना के तुरंत पूर्व तमिलनाडु के चेंगलपट्टु जिले के प्रायः दो हजार गाँवों की सार्वजनिक नीति, अर्थनीति एवं अन्य व्यवस्थाओं संबंधी अत्यंत विस्तृत जानकारी केंद्र ने संकलित की है। 1881 से 2001 तक की जनगणनाओं के आंकड़ों के आधार पर भारत के विभिन्न जिलों के विस्तृत जनसांख्यिकी स्वरूप और इसमें हो रहे दीर्घकालीन परिवर्तनों का एक वृहद् संकलन केंद्र में हुआ है। भारत के भूगोल, संस्कृति, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, अर्थव्यवस्था एवं नीति संबंधी एक विस्तृत, सचित्र एवं सुलभ संकलन भी केंद्र से छपा है।

परिषद् के पास प्रदेश के विभिन्न आयामों संबंधी मूलभूत सूचनाओं, आंकड़ों एवं मानचित्रों का भण्डार है। ऐसी व्यापक सूचनाओं एवं आंकड़ों के संकलन, विश्लेषण एवं सचित्र सुरुचिपूर्ण प्रस्तुतीकरण में समाजनीति समीक्षण केंद्र की विशिष्ट क्षमता है। इस प्रकल्प के माध्यम से परिषद् एवं केंद्र दोनों की इन क्षमताओं का उपयोग कर मध्यप्रदेश के जिलों के संसाधन मानचित्रकोष बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

इन मानचित्रकोषों में विभिन्न जिलों के सब आयामों का ऐसा प्रस्तुतीकरण करने की कल्पना है कि जिससे प्रत्येक जिले की भूमि एवं प्राकृतिक परिवेष की विशिष्टताएँ, वहाँ के लोगों के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अनुभव एवं उपलब्धियाँ और उनकी क्षमताएँ एवं आकांक्षाएँ सब स्पष्टतः उभर कर आ पायें। अब तक छपे संसाधन मानचित्रकोष प्रत्येक जिले संबंधी समस्त उपलब्ध सुदूरसंवेदी मानचित्रों, सांख्यिकी आंकड़ों एवं विभिन्न तकनीकी सूचनाओं को अपने में समेटे हुए हैं और इस दृष्टि से ये ब्रिटिश काल से चली आ रही जिला विवरणिकाओं से कहीं अधिक समृद्ध हैं। पर सांख्यिकी एवं तकनीकी सूचनाओं से परिपूर्ण होते हुए भी ये मानचित्रकोष पढ़ने में जिले की भूमि एवं लोगों की भावभीनी गौरवगाथाओं जैसे ही लगते हैं।

मैं टीकमगढ़ संसाधन मानचित्रकोष के इस हिंदी संस्करण के लिये इस प्रकल्प से जुड़े परिषद् एवं केंद्र के समस्त सहयोगियों का अभिनंदन करता हूँ। इस कार्य के साथ जुड़कर परिषद् के वैज्ञानिकों को अपनी तकनीकी सूचनाओं को विभिन्न जिलों की भूमि एवं वहाँ के लोगों के संदर्भ में देखने की एक नयी दृष्टि मिली है और उन्हें यह भास हुआ है कि उनकी तकनीकी विशेषज्ञता का उसके सीमित तकनीकी क्षेत्र से बाहर भी व्यापक उपयोग संभव है।

इस कार्य को करने का अवसर देने के लिये हम मध्यप्रदेश शासन एवं उसके प्रमुख माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के प्रति आभारी है। मध्यप्रदेश प्रशासन के विभिन्न विभागों और विशेषतः भू-अभिलेखायुक्त एवं उनके अधिकारियों ने हमें सहर्ष सब आंकड़े उपलब्ध करवाये हैं। इस व्यापक सहयोग के बिना यह कार्य संभव ही नहीं था।

यह मानचित्रकोष टीकमगढ़ जिले के लोगों को समर्पित है।

डॉ. प्रमोद कुमार वर्मा
महानिदेशक
मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद्

भोपाल
29 अगस्त 2015